इकाई–3: 'गोदान' के पात्रों का चरित्र-चित्रण

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

3.1 'गोदान' के गौण पात्र

3.2 'गोदान' के मुख्य पात्र

3.2.1 गोदान के पुरूष पात्र

3.2.2 गोदान के स्त्री पात्र

3.3 गोदान के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

3.3.1 होरी का चरित्र-चित्रण

3.3.2 मेहता का चरित्रांकन

3.3.3 रायसाहब अमरपाल सिंह का चरित्र

3.3.4 गोबर का चरित्र-चित्रण

3.3.5 धनिया का चरित्र

3.3.6 मालती का चरित्र

3.4 सारांश (Summary)

3.5 शब्दकोश (Keywords)

3.6 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

3.7 सन्दर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- 'गोदान' के मुख्य एवं गौण पात्रों के चरित्र-चित्रण को समझने में;
- 'गोदान' के पुरूष एवं स्त्री पात्रों की व्याख्या करने में;
- समालोचकों द्वारा 'गोदान' के पात्रों पर की गई टिप्पणी को जानने में;
- पात्रों के माध्यम से 'गोदान' की कथावस्तु की जानकारी प्राप्त करने में।

प्रस्तावना (Introduction)

'गोदान' उपन्यास के माध्यम से प्रेमचन्द जी ने समाज में व्याप्त बुराइयों और समस्याओं का वर्णन हमारे समक्ष प्रस्तुत

Scanned by CamScanner

2. प्रोफेसर बी. मेहता यूनिवर्सिटी में ..... के अध्यापक हैं।

3. दातादीन ..... के पिता हैं।

3.3 'गोदान' के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

3.3.1 होरी का चरित्र-चित्रण

गोदान का प्रधान पात्र होरी अवध के एक ग्राम बेलारी का पाँच बीघे का कृषक है। प्रेमचंद जी ने होरी के रूप में एक अमर पात्र की सृष्टि की है जो भारतीय कृषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। होरी के चरित्र में उपलब्ध दो गुण–उसकी शाश्वत गरीबी और परिश्रम करते रहने की दृढ़ इच्छाशक्ति वास्तव में प्रेमचंद के अपने व्यक्तित्व से मेल खाते हैं। इसी प्रकार प्रो. मेहता के माध्यम से प्रेमचंद ने अपने 'विचारों' को इस उपन्यास में अभिव्यक्त किया है। **डॉ. राम विलास शर्मा** ने इसीलिए मेहता और होरी के मेल से बने व्यक्ति को प्रेमचंद का व्यक्तित्व निरूपित करते हुए लिखा है, **"गोदान के किसी एक पात्र को प्रेमचंद का प्रतिनिधि पात्र नहीं कहा जा सकता, लेकिन अगर मेहता से होरी को जोड़ा जा सके तो जो व्यक्ति बनेगा वह बहुत कुछ प्रेमचंद से मिलता-जुलता होगा। मेहता में यदि उन्होंने अपने विचार डाले हैं तो होरी में बराबर परिश्रम करते रहने की दृढ़ इच्छाशक्ति।"**

नोट्स होरी गाय पालने की अभिलाषा को अपने भाई हीरा की ईर्ष्या के कारण पूरा नहीं कर पाता है।

होरी को अपने जीवन में प्राय: उन्हीं समस्याओं से जूझना पड़ा जो एक सामान्य भारतीय कृषक के जीवन में रहती हैं। होरी रायसाहब का आसामी है और **भाग्यवादी** है। गोबर से वह यही कहता है कि हमें परमात्मा ने गरीब बनाया है। होरी **व्यवहारकुशल है,** जब-तब रायसाहब को सलाम करने उनके यहाँ जाता रहता है क्योंकि वह जानता है कि **"जब हमारी गर्दन दूसरों के पैरों के नीचे दबी हुई है तब अकड़कर निबाह नहीं हो सकता।"**

होरी निहायत ईमानदार, परोपकारी एवं सीधा-सादा कृषक है किंतु उसमें भी वे दुर्गुण हैं जो एक सामान्य कृषक में होते हैं। वह पक्का स्वार्थी भी है, बांस बेचते समय कुछ ही पैसों के लिए अपने भाई का हिस्सा मारने हेतु बंसोर से सौदा करता है। अन्य किसानों की भांति वह भी रुई में बिनौले मिला देता है, सन को गीला कर देता है तथा घर में कुछ रुपए होते हुए भी रुपए न होने की बात कहकर झूठ बोलता है। होरी की धर्मभीरुता, भाग्यवादिता और व्यवहारकुशलता एक साधारण कृषक जैसी ही है।

आर्थिक अभाव से ग्रस्त होरी कर्ज एवं ऋणग्रस्तता के बोझ से दबा हुआ है और शोषण का शिकार है। प्राचीन मान्यताओं, संस्कारों एवं रूढ़ियों में जकड़ा हुआ होरी समाज एवं बिरादरी से इतना डरता है कि जब झुनिया के प्रकरण में बिरादरी उसे दंड देती है तो अपना हुक्का-पानी खुलवाने के लिए वह अपनी सारी उपज ढो-ढोकर पंचों को दे देता है और दंड के रुपए देने हेतु कर्ज लेता है।

होरी की एकमात्र अभिलाषा थी कि उसके पास एक गाय हो। गाय उसके लिए प्रतिष्ठा की वस्तु है, इसलिए जब उसे भोला ने गाय उधार में दे दी तो उसे धनिया के विरोध के बावजूद अपने द्वार पर बांधता है। ईर्ष्यावश हीरा ने गाय को विष खिला दिया और गाय का 'गोरस' पाने की होरी की लालसा धरी की धरी रह गयी। यह गाय उसके लिए विपत्ति लेकर आयी। किसान के जीवन की यह कितनी बड़ी ट्रेजिडी है कि वह अपनी छोटी सी अभिलाषा को भी जीवन में पूरा नहीं कर पाया और मृत्यु के अवसर पर उससे 'गोदान' के लिए कहा जाता है।

होरी परिवार की मर्यादा का रक्षक है। वह जानता है कि हीरा ने उसकी गाय को जहर दिया है किंतु इस बात को

Scanned by CamScanner